फुल स्टॉप - 44

अव्यक्त बापदादा :- (30.01.1988)

➳ _ ➳ कोई प्रशंसा करे और मुस्कराये - इसको सहनशीलता नहीं कहते। लेकिन दुश्मन बन, क्रोधित हो अपशब्दों की वर्षा करे, ऐसे समय पर भी सदा मुस्कराते रहना, संकल्पमात्र भी मुरझाने का चिन्ह चेहरे पर न हो। इसको कहा जाता है - सहनशील। दुश्मन आत्मा को भी रहमदिल भावना से देखना, बोलना, सम्पर्क में आना। इसको कहते हैं सहनशीलता।

➳ _ ➳ स्थापना के कार्य में, सेवा के कार्य में कभी छोटे, कभी बड़े तूफान आये। जैसे यादगार शास्त्रों में महावीर हनुमान के लिए दिखाते हैं कि इतना बड़ा पहाड़ भी हथेली पर एक गेंद के समान ले आया। ऐसे, कितनी भी बड़ी पहाड़ समान समस्या हो, तूफान हो, विघ्न हो लेकिन पहाड़ अर्थात् बड़ी बात को छोटा सा खिलौना बनाए खेल की रीति से सदा पार किया वा बड़ी भारी बात को सदा हल्का बनाए स्वयं भी हल्के रहे और दूसरों को भी हल्का बनाया। इसको कहते हैं सहनशीलता।

➳ _ ➳ छोटे से पत्थर को पहाड़ नहीं लेकिन पहाड़ को गेंद बनाया। बिस्तार को सार में लाना, यह है सहनशीलता। विघ्नों को, समस्या को अपने मन में वा दूसरों को आगे विस्तार करना अर्थात् पहाड़ बनाना है। लेकिन विस्तार में ना जायें 'नथिंग न्यू' के फुल स्टाप से बिन्दी लगाए बिन्दी बन आगे बढ़े - इसको कहते हैं वितार को और सार में लाना।

➳ _ ➳ सहनशील श्रेष्ठ आत्मा सदा ज्ञान-योग के सार में स्थित हो ऐसे विस्तार को, समस्या को, विघ्नों को भी सार में ले आती है जैसे ब्रह्मा बाप ने किया। जैसे लम्बा रास्ता पार करने में समय, शक्तियाँ समाप्त हो जाती अर्थात् ज्यादा यूज़ होतीं। ऐसे विस्तार है लम्बा रास्ता पार करना और सार है शार्टकट रास्ता पार करना। पार दोनों ही करते हैं लेकिन | शार्टकट करने वाले समय और शक्तियों की बचत होने कारण निराश नहीं होते, दिलशिकस्त नहीं होते, सदा मौज में मुस्कराते पार करते हैं। इसको कहा जाता है सहनशीलता।

➢➢ बड़ी बात को छोटा बनाना सहनशीलता है...

➳_ ➳ उसका विस्तार करना पहाड़ बनाना है...

→ कोई तारीफ, महिमा करे, तब उसे सहन करना नहीं कहेंगे...

■ कोई ग्लानी, निंदा, उपहास करे, उस समय सहनशीलता कहा जायेगा...

➢➢ कौन कौन सी बातों को सहन करें?

➳_ ➳ सहनशीलता का ट्राईएंगल

→ स्वयम में किन बातों को सहन करें?

■ बीमारी

▶ इलाज करे, पर सहन तो करना है...

▶ क्योकि हिसाब किताब है...

▶ अचानक कुछ हो जाये, उस सहन तो करना होगा...

→ दूसरों में किन बातों को सहन करें?

- दूसरों की सोच
- उनके कटु बोल
- स्वभाव और संस्कार
- व्यवहार और चलन
- उनके कर्म, काम करने का तरीका, ढंग...
- उनका दृष्टिकोण
- दूसरों के असत्य बोल
- उनके द्वारा किया गया अन्याय, अत्याचार, जुल्म
- दबाव
- दूसरों का असत्य जीवन... अलग अलग व्यक्तित्व...
  - ▶ बड़े
  - ▶ छोटे
  - ▶ साथी
  - ▶ ज्ञानी
  - ▶ जो ज्ञान में नहीं हैं...
- इन सभी का ही सहन करना होगा...

→ प्रकृति में किन किन चीजों को सहन करना है?

- मौसम का बदलाव
- प्राकृतिक आपदाएं

➢➢ सहन क्यों करना है?

➳_ ➳ सात कारण

→ बाप कहते हैं दूसरों की वजह से नहीं, बाप की आज्ञा है... दुसरो के लिए सहन करेंगे तो मजबूरी ल्गेगेई, वह व्यक्ति सामने आयेगा... जब ये समझोगे बाप की आज्ञा है, तो मोहब्बत से सहन करेंगे... मरना शब्द बंद करो... ये मरना नहीं, अधिकारी बनना है...

→ जितना सहन करोगे, उतना अधिक शक्तिशाली बनोगे...

→ संबंधो में मधुरता लाने के लिए

→ संगठन में मजबूती, एकजुटता बनाये रखने के लिये

→ शहंशाह बनने के लिए, उंच पद पाने के लिए

→ सहन करना भी एक तपस्या ही है... समाधान से दुःख को सहन करना भी एक तपश्चर्या है...

→ हम पूर्वज हैं, इसलिए सहन करना है...

→ हिसाब किताब चुक्तु हो रहे हैं इसलिए भी सहन करना है...

- पर कैसे सहन करते हैं... मजबूरी से या मोहब्बत से...

▶ बाबा कहते हैं ये मरना नहीं है, ये अधिकारी बनना है...

➢➢ कब तक सहन करना है?

➳_ ➳ जब तक जीना है, तब तक

➳_ ➳ जब तक संगम युग है...

➳_ ➳ जब तक पढना है...

➳_ ➳ जब तक सम्पूर्ण कर्मातीत न बन जाते...

➳_ ➳ जब तक सुन्दर, दर्शनीय मूर्त नहीं बन जाते...

→ जो मूर्ती बनेंगे, उनकी पूजा, महिमा, आरती, वन्दना होगी...

■ जब मोहब्बत से सहन कर रहे हैं तो कब तक का तो प्रश्न ही नहीं...

➢➢ कैसे सहन करें?

➳_ ➳ दूसरों की सोच

→ हर एक की सोच अपनी अपनी है...

→ हम क्यों देखे इसकी सोच गलत है...

→ हर एक का पार्ट, भाग्य अलग अलग है...

■ किसी की सोच हमारे जैसी नहीं हो सकती...

➳_ ➳ व्यवहार

→ सबके अलग अलग संस्कार हैं...

→ अलग अलग स्वभाव है...

■ दुसरो के झूठ को सहन करना होगा..

▶ अमृतवेला पर क्लास कराते हैं पर खुद नहीं करते.. हमें सहन करना होगा...

→ दुसरो के अन्याय को सहन करना होगा..

■ ड्रामा कल्याणकारी है...

■ अन्याय हो ही नहीं सकता...

■ वो हमें लग रहा है अन्याय है...

→ प्रकृति, खुद की बीमारी को ख़ुशी ख़ुशी से सहन करना ...

➢➢ सहन के साथ समाना भी हो...

➳_ ➳ सहन करने का भी अहंकार न आ जाये...